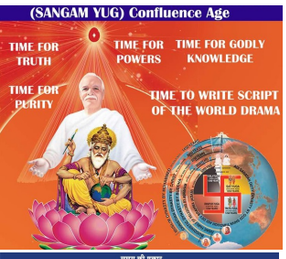

25-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - संगमयुग पर ही तुम्हें आत्म-अभिमानी बनने की मेहनत करनी पड़ती सतयुग अथवा कलियुग में यह मेहनत होती नहीं"

प्रश्नः- श्रीकृष्ण का नाम उनके माँ बाप से भी अधिक बाला है, क्यों?

उत्तरः- क्योंकि श्रीकृष्ण से पहले जिनका भी जन्म होता है वो जन्म योगबल से नहीं होता। श्रीकृष्ण के माँ बाप ने कोई योगबल से जन्म नहीं लिया है।

2- पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं, वही सद्गति को पाते हैं। जब सब पाप आत्मायें खत्म हो जाती हैं तब गुलगुल (पावन) नई दुनिया में श्रीकृष्ण का जन्म होता है, उसे ही वैकुण्ठ कहा जाता है। 3- संगम पर श्रीकृष्ण की आत्मा ने, सबसे अधिक पुरुषार्थ किया है इसलिए उनका नाम बाला है।

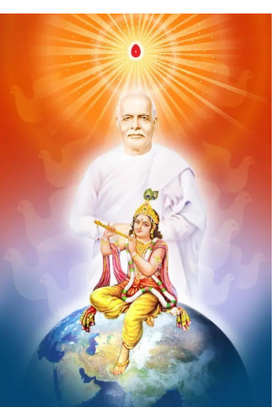

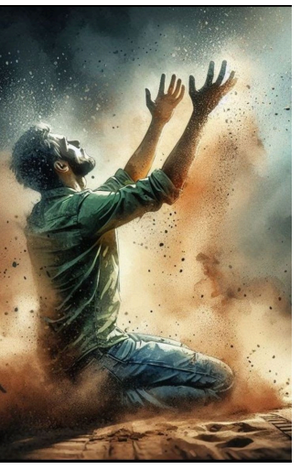

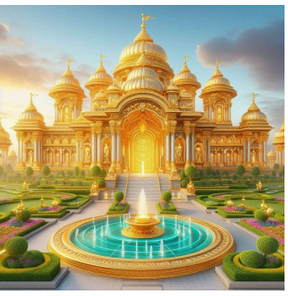

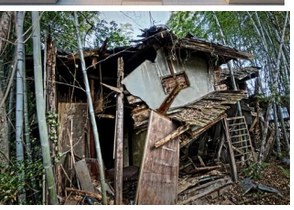

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। 5 हज़ार वर्ष के बाद एक ही बार बच्चों को आकर पढ़ाते हैं, पुकारते भी हैं कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ। तो सिद्ध होता है कि यह पतित दुनिया है। नई दुनिया, पावन दुनिया थी। नया मकान खूबसूरत होता है। पुराना जैसे टूटा फूटा हो जाता है। बरसात में गिर पड़ता है। अभी तुम बच्चे जानते हो बाप आया है नई दुनिया बनाने। अभी पढ़ा रहे हैं। फिर 5 हज़ार वर्ष के बाद पढ़ायेंगे। ऐसे कभी कोई साधू-सन्त आदि अपने फालोअर्स को नहीं पढ़ायेंगे। उनको यह पता ही नहीं है। न खेल का पता है क्योंकि निवृत्ति मार्ग वाले हैं। बाप बिगर कोई भी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझा न सके। आत्म-अभिमानी बनने में ही बच्चों को मेहनत होती है क्योंकि आधाकल्प में तुम कभी आत्म-अभिमानी बने नहीं हो। अब बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझो। ऐसे नहीं कि आत्मा सो परमात्मा। नहीं, अपने को आत्मा समझ परमपिता परमात्मा शिव को याद करना है। याद की यात्रा मुख्य है, जिससे ही तुम

अभी नहीं तो कभी नहीं

Exclusive Authority of Shiv baba

पतित से पावन बनते हो। इसमें कोई स्थूल बात नहीं। कोई नाक कान आदि नहीं बन्द करना है। मूल बात है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना। तुम आधाकल्प से हिरे हुए हो (very firm Practice) - देह-अभिमान में रहने के। पहले अपने को आत्मा समझेंगे तब (Then only) बाप को याद कर सकेंगे। भक्ति मार्ग में भी बाबा-बाबा कहते आते हैं। बच्चे जानते हैं सतयुग में एक ही लौकिक बाप है। वहाँ पारलौकिक बाप को याद नहीं करते हैं क्योंकि सुख है। भक्ति मार्ग में फिर दो बाप बन जाते हैं। लौकिक और पारलौकिक। दु:ख में सब पारलौकिक बाप को याद करते हैं। सतयुग में भक्ति होती नहीं। वहाँ तो है ही ज्ञान की प्रालब्ध। ऐसे नहीं कि ज्ञान रहता है। इस समय के ज्ञान की प्रालब्ध मिलती है। बाप तो एक ही बार आते हैं। आधाकल्प बेहद के बाप का, सुख का वर्सा रहता है। फिर लौकिक बाप से अल्पकाल का वर्सा मिलता है। यह मनुष्य नहीं समझा सकते। यह है नई बात, 5 हज़ार वर्ष में संगमयुग पर एक ही बार बाप आते हैं, जबकि कलियुग अन्त, सतयुग आदि

ये पक्का समझ लो..

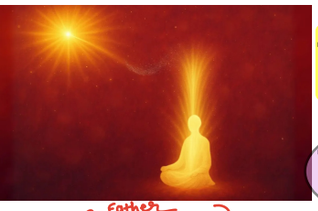

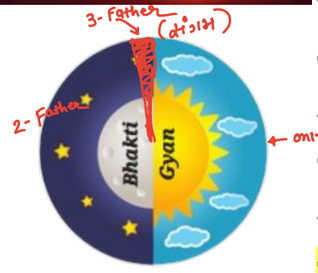

का संगम होता है तब ही बाप आते हैं - नई दुनिया फिर से स्थापन करने। नई दुनिया में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था फिर त्रेता में रामराज्य था। बाकी देवताओं आदि के जो इतने चित्र बनाये हैं वह सब हैं भक्ति मार्ग की सामग्री। बाप कहते हैं इन सबको भूल जाओ। अभी अपने घर को और नई दुनिया को याद करो।

ये दुनिया तो मायावी है
माया से भला कैसी यारी
अपने तो दो ही ठिकाने हैं
वैकुण्ठ दुनिया निराकारी

ज्ञान मार्ग है समझ का मार्ग, जिससे तुम 21 जन्म समझदार बन जाते हो। कोई दु:ख नहीं रहता। सतयुग में कभी कोई ऐसे नहीं कहेंगे कि हमको शान्ति चाहिए। कहा जाता है ना - मांगने से मरना भला। बाप तुमको ऐसा साहूकार बना देते हैं जो देवताओं को भगवान से कोई चीज़ मांगने की दरकार नहीं रहती। यहाँ तो दुआ मांगते हैं ना। पोप आदि आते हैं तो कितने दुआ लेने जाते हैं। पोप कितनों की शादियाँ कराते हैं। बाबा तो यह काम नहीं करते। भक्ति मार्ग में जो पास्ट हो गया है सो

मांगन मरण समान है,
मति मांगो कोई भीख,
मांगन ते मरना भला,
यह सतगुरु की सीख

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

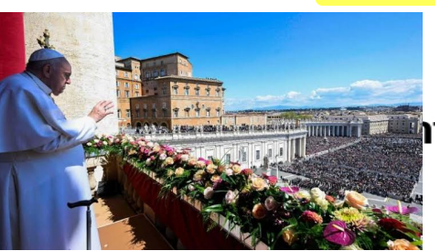

How lucky and Great we are...!

25-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

अब हो रहा है सो फिर रिपीट होगा। दिन-प्रतिदिन भारत कितना गिरता जाता है। अभी तुम हो संगम पर। बाकी सब हैं कलियुगी मनुष्य। जब तक यहाँ न आयें तब तक कुछ भी समझ न सकें कि अभी संगम है वा कलियुग है? एक ही घर में बच्चे समझते हैं संगम पर हैं, बाप कहेंगे हम कलियुग में हैं तो कितनी तकलीफ हो पड़ती है। खान-पान आदि का भी झंझट हो पड़ता है। तुम संगम-युगी हो शुद्ध पवित्र भोजन खाने वाले। देवतायें कभी प्याज़ आदि थोड़ेही खाते हैं। इन देवताओं को कहा ही जाता है निर्विकारी। भक्ति मार्ग में सब तमोप्रधान बन गये हैं। अब The God (World Almighty) बाप कहते हैं सतोप्रधान बनो। कोई भी ऐसा नहीं है जो समझें कि आत्मा पहले सतोप्रधान थी फिर तमोप्रधान बनी है क्योंकि वह तो आत्मा को निर्लेप समझते हैं। आत्मा सो परमात्मा है, ऐसे-ऐसे कह देते हैं।

But we know, How Lucky & Great we are..!

यह परम ज्ञान अब तक
ना पढ़ा ना लिखा गया है किताबों में
भगवान पढ़ायेंगे सम्मुख
सोचा ना देखा ख्वाबों में
प्रभु मिलन का यह प्यारा अनुभव
शब्दों में कहा नहीं जाता है
भगवान तुम्हारा ज्ञान सिमर कर

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥
हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतोंका सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानोंकी बुद्धि और तेजस्वियोंका तेज हूँ॥ १० ॥ अध्याय- 7
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥
हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानोंका आसक्ति और कामनाओंसे रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतोंमें धर्मके अनुकूल अर्थात् शास्त्रके अनुकूल काम हूँ॥ ११ ॥

बाप कहते हैं ज्ञान सागर मैं ही हूँ, जो इस देवी-

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

देवता धर्म के होंगे वह सब आकर फिर से अपना वर्सा लेंगे। अभी सैपलिंग लग रही है। तुम समझ जायेंगे - यह इतना ऊंच पद पाने लायक नहीं है।

घर में जाकर शादियां आदि करते छी-छी होते रहते हैं। तो समझाया जाता है ऊंच पद पा नहीं सकते। यह राजाई स्थापन हो रही है। बाप कहते हैं - मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ तो प्रजा जरूर बनानी पड़े। नहीं तो राज्य कैसे पायेंगे। यह गीता के अक्षर हैं ना - इनको कहा ही जाता है गीता का युग। तुम राजयोग सीख रहे हो - जानते हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउन्डेशन लग रहा है। सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी दोनों राजाई स्थापन हो रही हैं। ब्राह्मण कुल स्थापन हो चुका है। ब्राह्मण ही फिर सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी बनते हैं। जो अच्छी रीति मेहनत करेंगे वह सूर्यवंशी बनेंगे। और धर्म वाले जो आते हैं वह आते ही हैं अपने धर्म की स्थापना करने। पीछे उस धर्म की आत्मायें आती रहती हैं, धर्म की वृद्धि होती जाती है। समझो कोई क्रिश्चियन है तो उन्हों का बीजरूप क्राइस्ट ठहरा। तुम्हारा बीजरूप कौन है? बाप, क्योंकि बाप ही

king of kings

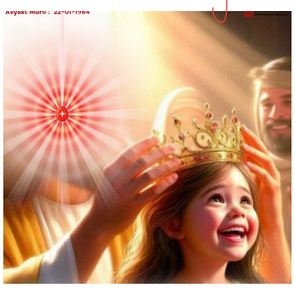

Example

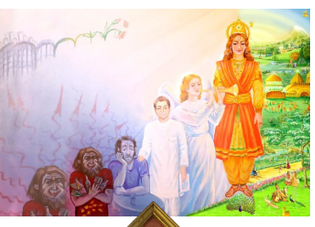

आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं ब्रह्मा द्वारा। ब्रह्मा को ही प्रजापिता कहा जाता है। रचता नहीं कहेंगे। इन द्वारा बच्चे एडाप्ट किये जाते हैं। ब्रह्मा को भी तो क्रियेट करते हैं ना। बाप आकर प्रवेश कर यह रचते हैं। शिव-बाबा कहते हैं तुम मेरे बच्चे हो। ब्रह्मा भी कहते हैं तुम मेरे साकारी बच्चे हो। अभी तुम काले छी-छी बन गये हो। अब फिर ब्राह्मण बने हो। इस संगम पर ही तुम पुरुषोत्तम देवी-देवता बनने की मेहनत करते हो। देवताओं को और शूद्रों को कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती, तुम ब्राह्मणों को मेहनत करनी पड़ती है देवता बनने के लिए। बाप आते ही हैं संगम पर। यह है बहुत छोटा युग इसलिए इनको लीप युग कहा जाता है। इनको कोई जानते नहीं। बाप को भी मेहनत लगती है। ऐसे नहीं कि झट से नई दुनिया बन जाती है। तुमको देवता बनने में टाइम लगता है। जो अच्छे कर्म करते हैं तो अच्छे कुल में जन्म लेते हैं। अभी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार गुल-गुल बन रहे हो। आत्मा ही बनती है। अभी तुम्हारी आत्मा अच्छे कर्म सीख रही है। आत्मा ही अच्छे वा बुरे

But we know, How Lucky & Great we are..!

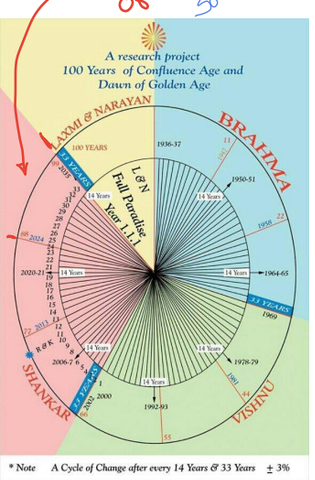

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
दिन रात की ये सेवा हम याद करे..

We are at last phase of Transformation...
So Be Alert..!

संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल (फूल) बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है, छांटछूट होकर। तमोप्रधान जो भी हैं वह खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं तब श्रीकृष्ण का जन्म होता है, तब तक बदली सदली होती रहती है। जब कोई छी-छी नहीं रहेगा तब श्रीकृष्ण आयेगा, तब तक तुम आते जाते रहेंगे। श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले माँ बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे। बाकी चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम श्रीकृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल (पवित्र) जन्म श्रीकृष्ण का ही पहले-पहले होता है। उसके बाद नई दुनिया वैकुण्ठ कहा जाता है।

ये पक्का समझ लो..

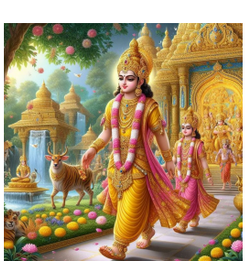

Refer Last Page in connection with श्री कृष्ण Birth

श्रीकृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। श्रीकृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। श्रीकृष्ण के माँ-बाप का नाम इतना बाला नहीं है। श्रीकृष्ण से पहले जिनका जन्म होता है वो योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं श्रीकृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उन्हों का भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है जितना श्रीकृष्ण ने किया है। यह सब बातें आगे चल तुम समझते जायेंगे। पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वही सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं तब उन्हों का जन्म होता है फिर कहेंगे पावन दुनिया इसलिए श्रीकृष्ण का नाम बाला है। माँ-बाप का इतना नहीं। आगे चल तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। टाइम तो पड़ा है। तुम किसको भी समझा सकते हो - हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। विश्व में इनका राज्य अब स्थापन हो रहा है। हमारे लिए तो नई दुनिया चाहिए। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय

Mind very well...

costume of Mother-Father of krishna are made by

Coming soon...

Coming soon...

नहीं कहेंगे। तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। देवता बनने वाले हो। दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे फिर तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों स्वच्छ होंगे। अभी तुम संगम-युगी पुरुषोत्तम बनने वाले हो। यह सारी मेहनत की बात है। याद से विकर्माजीत बनना है। तुम खुद कहते हो याद घड़ी-घड़ी भूल जाती है। बाबा पिकनिक पर बैठते हैं तो बाबा को ख्याल रहता है। हम याद में नहीं रहेंगे तो बाबा क्या कहेंगे इसलिए बाबा कहते हैं तुम याद में बैठ पिकनिक करो। कर्म करते माशूक को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे, इसमें ही मेहनत है। याद से आत्मा पवित्र होगी, अविनाशी ज्ञान धन भी जमा होगा। फिर अगर अपवित्र बन जाते हैं तो सारा ज्ञान बह जाता है। पवित्रता ही मुख्य है। बाप तो अच्छी-अच्छी बात ही समझाते हैं। यह सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान और कोई में भी नहीं है। और जो भी सतसंग आदि हैं वह सब हैं भक्ति मार्ग के।

So, Be Prepared

How vigilant my Sweet Brahmababa is...!

Exclusive Authority of Shiv baba

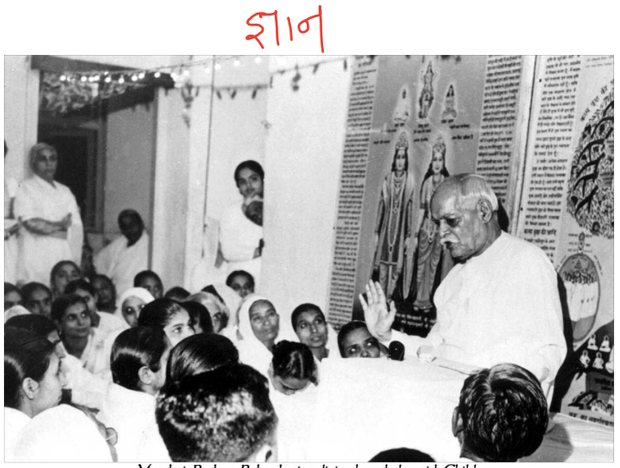

Mumbai: Brahma Baba sharing divine knowledge with Children.

v/s

योग

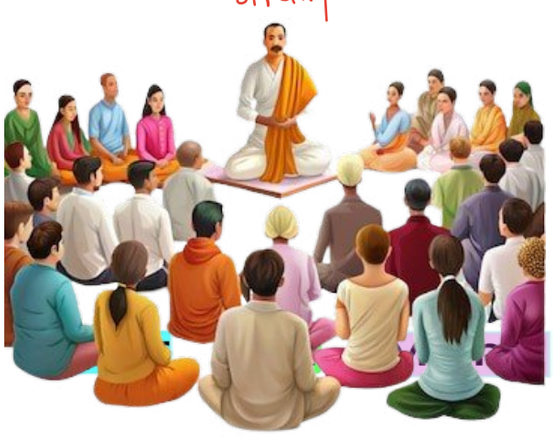

बाबा ने समझाया है - भक्ति वास्तव में प्रवृत्ति मार्ग वालों को ही करनी है। तुम्हारे में तो कितनी ताकत रहती है। घर बैठे तुमको सुख मिल जाता है। सर्वशक्तिमान् बाप से तुम इतनी ताकत लेते हो। संन्यासियों में भी पहले ताकत थी, जंगलों में रहते थे। अभी तो कितने बड़े-बड़े फ्लैट बनाकर रहते हैं। अभी वह ताकत नहीं है। जैसे तुम्हारे में भी पहले सुख की ताकत रहती है। फिर गुम हो जाती है। उन्हों में भी पहले शान्ति की ताकत थी, अब वह ताकत नहीं रही है। आगे तो सच कहते थे कि रचता और रचना को हम नहीं जानते। अभी तो अपने को भगवान शिवोहम् कह बैठते हैं। बाप समझाते हैं - इस समय सारा झाड़ तमोप्रधान है इसलिए सभी का उद्धार करने मैं आता हूँ। यह दुनिया ही बदलनी है। सब आत्मायें वापिस चली जायेंगी। एक भी नहीं जिसको यह पता हो कि हमारी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है जो फिर से रिपीट करेंगे। आत्मा इतनी छोटी है, इनमें अविनाशी पार्ट भरा है जो कभी विनाश नहीं होता। इसमें बुद्धि बड़ी अच्छी पवित्र चाहिए। वह तब

नेती - नेती

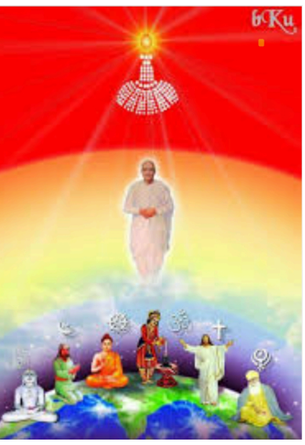

How Great we are...!

m.m.m....imp.

25-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

होगी जब याद की यात्रा में मस्त रहेंगे। मेहनत सिवाए पद थोड़ेही मिलेगा इसलिए गाया जाता है

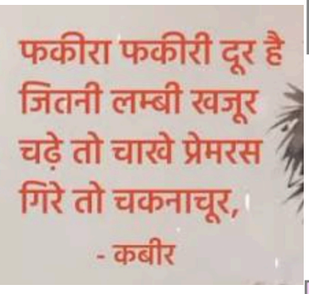

चढ़े तो चाखे..... कहाँ ऊंच ते ऊंच राजाओं का राजा डबल सिरताज, कहाँ प्रजा। पढ़ाने वाला तो एक ही है। इसमें समझ बड़ी अच्छी चाहिए। बाबा बार-बार समझाते हैं याद की यात्रा है मुख्य। मैं तुमको पढ़ाकर विश्व का मालिक बनाता हूँ। तो टीचर गुरू भी होगा। बाप तो है ही टीचरों का टीचर, बापों का बाप। यह तो तुम बच्चे जानते हो हमारा बाबा बहुत प्यारा है। ऐसे बाप को तो बहुत याद करना है। पढ़ना भी पूरा है। बाप को याद नहीं करेंगे तो पाप नष्ट नहीं होंगे। बाप सभी आत्माओं को साथ ले जायेंगे। बाकी शरीर सब खत्म हो जायेंगे। आत्मायें अपने-अपने धर्म के सेक्शन में जाकर निवास करती हैं। अच्छा!

Again & Again

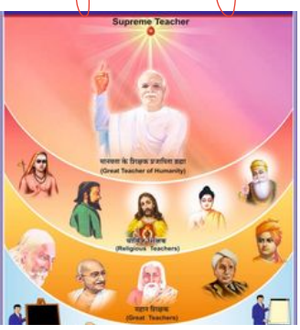

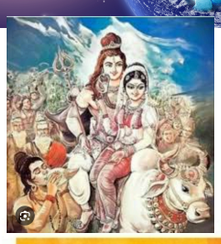

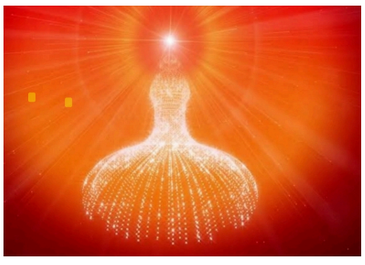

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) बुद्धि को पवित्र बनाने के लिए याद की यात्रा में मस्त रहना है। कर्म करते भी एक माशूक याद रहे - तब विकर्माजीत बनेंगे।

2) इस छोटे से युग में मनुष्य से देवता बनने की मेहनत करनी है। अच्छे कर्मों के अनुसार अच्छे संस्कारों को धारण कर अच्छे कुल में जाना है।

वरदान:- **अपनी रूहानी लाइटस द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने की सेवा करने वाले सहज सफलतामूर्त भव**

जैसे साकार सृष्टि में जिस रंग की लाइट जलाते हो वही वातावरण हो जाता है।

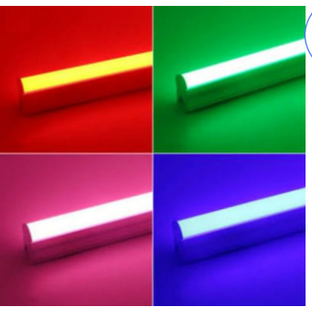

अगर हरी लाइट होती है तो चारों ओर वही प्रकाश छा जाता है। लाल लाइट जलाते हो तो याद का वायुमण्डल बन जाता है।

जब स्थूल लाइट वायुमण्डल को परिवर्तन कर देती है तो आप लाइट हाउस भी पवित्रता की लाइट व सुख की लाइट से वायुमण्डल परिवर्तन करने की सेवा करो तो सफलतामूर्त बन जायेंगे।

स्थूल लाइट आंखों से देखते हैं, रूहानी लाइट अनुभव से जानेंगे।

स्लोगन:- व्यर्थ बातों में समय और संकल्प गॅवाना - यह भी अपवित्रता है।

Definition of

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अव्यक्त इशारे -

स्वयं और सर्व के प्रति

मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

कोई भी खजाना कम खर्च करके अधिक प्राप्ति कर लेना, यही योग का प्रयोग है। मेहनत कम सफलता ज्यादा इस विधि से प्रयोग करो।

जैसे समय वा संकल्प श्रेष्ठ खजाने हैं, तो संकल्प कम से कम खर्च हों लेकिन प्राप्ति ज्यादा हो।

जो साधारण व्यक्ति दो चार मिनट संकल्प चलाने के बाद, सोचने के बाद सफलता या प्राप्ति कर सकता है वह आप एक दो सेकेण्ड में कर सकते हो, इसको कहते हैं कम खर्चा बाला नशीन।

खर्च कम करो लेकिन प्राप्ति 100 गुणा हो इससे समय की वा संकल्प की जो बचत होगी, वह औरों की सेवा में लगा सकेंगे, दान पुण्य कर सकेंगे, यही योग का प्रयोग है।

May I have your Attention Please..!

m.m.m....imp.

27

विनाश को अंतकाल कहा जायेगा। उस समय बहुत काल का चांस तो समाप्त है ही, लेकिन थोडे समय का भी चांस समाप्त हो जायेगा। इसलिए बापदादा बहुत काल की समाप्ति का इशारा दे रहे है। फिर बहुत काल की गिनती का चांस समाप्त हो थोडा समय पुरुषार्थ, थोडा समय प्रालब्ध, यही कहा जायेगा। कर्मो के खाते में अब बहुतकाल खत्म हो थोडा समय वा अल्पकाल आरंभ हो रहा है। इसलिए यह वर्ष परिवर्तन काल का वर्ष है। बहुत काल से थोडे समय में परिवर्तन होना है। इसलिए इस वर्ष के पुरुषार्थ में बहुतकाल का हिसाब जितना जमा करने चाहो वह कर लो। फिर उल्हना नहीं देना कि हम तो अलबेले होकर चल रहे थे। आज नहीं तो कल बदल ही जायेंगे। इसलिए कर्मो की गति को जानने वाले बनो। नालेजफुल बन तीव्र गति से आगे बढो। ऐसा न हो दो हजार का हिसाब लगाते रहो। पुरुषार्थ का हिसाब अलग है और सृष्टि परिवर्तन का हिसाब अलग है। ऐसा नहीं सोचो कि अभी 15 वर्ष पडा है अभी 18 वर्ष पडा है। 99 में होगा, 88 में होगा..... यह नहीं सोचते रहना। हिसाब को समझो। अपने पुरुषार्थ और प्रालब्ध के हिसाब को जान उस गति से आगे बढ़ो। नहीं तो बहुत काल के पुराने संस्कार अगर रह गये तो इस बहुत काल की गिनती धर्मराजपुरी के खाते में जमा हो जायेगी। कोई-कोई का बहुत काल के व्यर्थ, अयथार्थ कर्म-विकर्म का खाता अभी भी है, बापदादा जानते हैं सिर्फ आउट नहीं करते हैं। थोडा सा पर्दा डाला हैं। लेकिन व्यर्थ और अयथार्थ का खाता अभी भी बहुत है। इसलिए यह वर्ष एकस्ट्रा गोल्डन चांस का वर्ष है। जैसे पुरुषोत्तम युग है वैसे यह पुरुषार्थ और परिवर्तन के गोल्डन चांस का वर्ष है। इसलिए विशेष हिम्मत और मदद के इस विशेष वरदान के वर्ष को साधारण 50 वर्ष के समान नहीं गँवाना। अभी तक बाप स्नेह के सागर बन सर्व सम्बन्ध के स्नेह में, अलबेलापन, साधारण पुरुषार्थ, इसको देखते-सुनते

रहमदिल मेरा बाबा

जागो जागो, समय पहचानो...

Mind very well...

Please... समय रहते जाग जाओ...

रहमदिल मेरा बाबा

धर्मराज

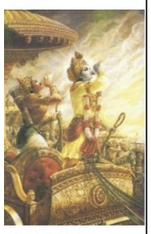

भी न सुन, न देख बच्चों को स्नेह की एकस्ट्रा मदद से, एकस्ट्रा मार्क्स देकर बढ़ा रहे हैं। लिफ्ट दे रहे हैं। लेकिन अभी समय परिवर्तन हो रहा है। इसलिए अभी कर्मो की गति को अच्छी तरह से समझ समय का लाभ लो। सुनाया था ना कि 18वाँ अध्याय आरंभ हो गया है। 18वाँ अध्याय की विशेषता- अब स्मृति स्वरूप बनो। अभी स्मृति, अभी विस्मृति नहीं। Definition of स्मृति स्वरूप अर्थात् बहुत काल स्मृति स्वतः और सहज रहे। अभी युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार, मन को मुँझने के संस्कार इसकी समाप्ति करो। नहीं तो यही बहुतकाल के संस्कार बन, अंत मति सो भविष्य गति प्राप्त कराने के निमित्त बन जायेंगे। सुनाया ना - अभी बहुत काल के पुरुषार्थ का समय समाप्त हो रहा है और बहुत काल की कमजोरी का हिसाब शुरु हो रहा है। समझ में आया! इसलिए यह विशेष परिवर्तन का समय है। अभी वरदाता है फिर हिसाब-किताब करने वाले बन जायेंगे। अभी सिर्फ स्नेह का हिसाब है। तो क्या करना है? स्मृति स्वरूप बनो। स्मृति स्वरूप स्वतः ही नष्टोमोहा बना ही देगा। अभी तो मोह की लिस्ट बडी लम्बी हो गई है। एक (1) स्व की प्रवृत्ति, एक (2) देवी परिवार की प्रवृत्ति, (3) सेवा की प्रवृत्ति, (4) हद के प्राप्तियों की प्रवृत्ति - इन सभी से नष्टोमोहा अर्थात् न्यारा बन प्यारा बनो। मैं-पन अर्थात् मोह। इससे नष्टोमोहा बनो। तब बहुतकाल के पुरुषार्थ से बहुतकाल के प्रालब्ध की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे। बहुतकाल अर्थात् आदि से अंत तक की प्रालब्ध का फल। वैसे तो एक-एक प्रवृत्ति का राज अच्छी तरह से जानते हो और भाषण भी अच्छा कर सकते हो। लेकिन निवृत्त होना अर्थात् नष्टोमोहा होना। समझा। प्वाइंटस तो आपके पास बापदादा से भी ज्यादा है। इसलिए प्वाइंट क्या सुनायें। प्वाइंटस है तो प्वाइंट बनो।

25/10/25 **(20.01.1986)**

अब तो जागो...

समझा?

Then only

(इ) आप हरेक **अमृतवेले से ही अपना टाइम टेबुल बनाओ** कि आज के दिन क्या-क्या करना है? जैसे शारीरिक कार्य का टाइम टेबुल बना है, वैसे आत्मा के उन्नति का भी टाइम-टेबुल बनाओ। समझा। इसमें अटेन्शन और चेकिंग कम है। अब ऐसा टाइम-टेबुल बनाओ। अमृतवेले **अपने पुरुषार्थ की उन्नति का प्लान सेट करना है कि** आज किस विषय पर वा किस कमज़ोरी पर विशेष अटेन्शन देकर इसकी परसेन्टेज बढ़ावें। हर एक अपनी हिम्मत के अनुसार वह प्लान बुद्धि में रखे कि आज के दिन में क्या प्रैक्टिकल में लायेंगे और कितनी परसेन्टेज तक इस बात को पुरुषार्थ में लायेंगे। अपनी दिनचर्या के साथ यह सेट करो और फिर रात को यह चेक करो कि अपनी सेट की हुई प्वॉइन्ट को कहाँ तक प्रैक्टिकल में और कितनी परसेन्टेज तक धारण कर सके? यदि नहीं कर सके तो उसका कारण? और किया तो किस-किस विशेष युक्ति से अपने में उन्नति का अनुभव किया? यह दोनों रिज़ल्ट सामने लानी चाहिए और अगर देखते हो कि जो आज का लक्ष्य रखा था उसमें उतनी सफलता नहीं हुई वा जितना प्लान बनाया उतना प्रैक्टिकल नहीं हो पाया, तो उसको छोड़ नहीं देना चाहिये।

Interim Result

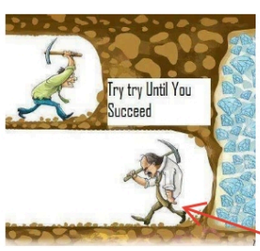

25/10/25

समझा?

बिल्कुल अच्छी धारणा वाली होगी वह अच्छी रीति समझा सकेंगे। ब्रह्मा पर ही जास्ती बात समझाने की होती है। विष्णु को भी नहीं जानते। यह भी समझाना होता है। वैकुण्ठ को विष्णुपुरी कहा जाता है अर्थात् लक्ष्मी-नारायण का राज्य था।

Secret Revealed

श्रीकृष्ण प्रिन्स होगा तो कहेंगे ना - हमारा बाबा राजा है। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण का बाप राजा नहीं हो सकता। श्रीकृष्ण प्रिन्स कहलाया जाता है तो जरूर राजा के पास जन्म हुआ है। साहूकार पास जन्म ले तो प्रिन्स थोड़ेही कहलायेंगे। राजा के पद और साहूकार के पद में रात-दिन का फ़र्क हो जाता है। श्रीकृष्ण के बाप राजा का नाम ही नहीं है। श्रीकृष्ण का कितना नाम बाला है। बाप का ऊंच पद नहीं कहेंगे। वह सेकण्ड क्लास का पद है जो सिर्फ निमित्त बनते हैं श्रीकृष्ण को जन्म देने। ऐसे नहीं कि श्रीकृष्ण की आत्मा से वह ऊंच पढ़ा हुआ है। नहीं। श्रीकृष्ण ही सो फिर नारायण बनते हैं। बाकी बाप का नाम ही गुम हो जाता है। है

Note it Down

13-08-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जरूर ब्राह्मण। परन्तु पढ़ाई में श्रीकृष्ण से कम है। श्रीकृष्ण की आत्मा की पढ़ाई अपने बाप से ऊंच थी, तब तो इतना नाम होता है। श्रीकृष्ण का बाप कौन था - यह जैसे किसको पता नहीं। आगे चल मालूम पड़ेगा। बनना तो यहाँ से ही है। राधे के भी माँ-बाप तो होंगे ना। परन्तु उनसे राधे का नाम जास्ती है क्योंकि माँ-बाप कम पढ़े हुए हैं। राधे का नाम उनसे ऊंच हो जाता है। यह हैं डीटेल की बातें - बच्चों को समझाने के लिए। सारा मदार पढ़ाई पर है। ब्रह्मा पर भी समझाने का अक्ल चाहिए। वही श्रीकृष्ण जो है उनकी आत्मा ही 84 जन्म भोगती है। तुम भी 84 जन्म लेते हो। सब इकट्ठे तो नहीं आयेंगे। जो पढ़ाई में पहले-पहले होते हैं वहाँ